RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 12 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 3 जून, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-75, अंक : 12, 31 मई, 3 जून 2018 तदनुसार 21 ज्येष्ठ सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

एक समय में एक पति और एक पत्नी

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।।

-ऋ. १०।८५।४२

शब्दार्थ-हे दम्पति! पतिपत्नि! तुम दोनों **इह+एव** = यहाँ ही **स्तम्** = रहो **मा** = मत **वियौष्टम्** = वियुक्त होवो। **पुत्रैः** = पुत्रों और **नप्तृभिः** = पोतों, नातियों के साथ **क्रीळन्तौ** = क्रीड़ा करते हुए **स्वे** = अपने **गृहे** = घर में **मोदमानौ** = आनन्दित होते हुए **विश्वम्** = पूरी **आयुः** = आयु **व्यश्नुतम्** = भोगो।

व्याख्या-वैदिक धर्म में पतिव्रतधर्म तथा पत्नीव्रत धर्म पर बहुत बल दिया गया है। वेद में विवाह का प्रयोजन सन्तान-उत्पादन है न कि भोग-विलास। जैसा कि अथर्ववेद [१४।२।७१] में पति-पत्नी दोनों कहते हैं-**'प्रजामा जनयावहै'** = आओ! हम दोनों मिलकर सन्तान उत्पन्न करें।

इसकी मानो व्याख्या करते हुए पारस्कर ऋषि लिखते हैं-**'तावेव विवहावहै, सह रेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून्।** [१।६] = ऐसे हम दोनों विवाह करें, वीर्याधान करें, सन्तान उत्पन्न करें और बहुत-से पुत्रों को प्राप्त करें।

सन्तान-उत्पत्ति के लिए संयम मुख्य है। उसके लिए पति-पत्नी दोनों को कुछ नियम पालन करने पड़ते हैं। सन्तान अपनी अपेक्षा उत्कृष्ट हो, इसके लिए संयम अनिवार्य है, उस संयम के लिए पतिव्रत तथा पत्नीव्रत दोनों आवश्यक हैं, अतः वेद में आदेश हुआ है-**'इहैव स्तं....'** = तुम दोनों यहाँ रहो। यदि एक समय में एक से अधिक पति या पत्नी का विधान होता, तो 'स्तम्' द्विवचन न होकर 'स्त' बहुवचन होता। चिरकाल तक यदि पति को प्रवास में रहना हो, तो पत्नी को साथ ले-जाए, अर्थात् यथासम्भव दोनों इकट्ठे रहें। वेद का स्पष्ट आदेश है-**'मा वि यौष्टम्'** = तुम एक-दूसरे से वियुक्त न होओ।

एक-दूसरे से पृथक् होने से प्रीति में त्रुटि हो सकती है। पति-पत्नी में परस्पर प्रेम न हो तो सन्तान अच्छी नहीं होती, जैसा कि मनु जी ने लिखा है-

सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।।
यदि हि स्त्री न रोचेत पुमांसं न प्रमोदयेत्।
अप्रमोदात्पुनः पुंसः प्रजनं न प्रवर्त्तते।।

-मनु० ३।६०-६१

जिस कुल में पत्नी से पति और पति से पत्नी अच्छी प्रकार सन्तुष्ट रहती है, उस कुल में सौभाग्य और ऐश्वर्य्य अवश्य निवास करता है। यदि स्त्री पति से प्रीति नहीं करती और पुरुष को प्रसन्न नहीं करती, तो पुरुष का सन्तान-जनन कार्य नहीं चल सकता। इसीलिए वेद का आदेश है कि-**'चक्रवाकेव दम्पती'** [अथर्व० १४।२।६४] = पति-पत्नी दोनों चकवा-चकवी की भाँति परस्पर प्रीति करने वाले हों। यह तभी हो सकता है जब एक समय में एक स्त्री का एक पति तथा एक पुरुष की एक ही स्त्री हो।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

आगामी आर्य महासम्मेलन बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन **11 नवम्बर 2018** को बरनाला में आयोजित किया जा रहा है। इसलिये पंजाब की समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वह इन तिथियों में अपनी अपनी आर्य समाज का कोई कार्यक्रम न रखें और इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिये पूरी शक्ति से जुट जाएं। आपके सहयोग से इससे पूर्व 17 फरवरी 2017 को लुधियाना और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सफल आर्य महासम्मेलन कर चुकी है। आशा है इस आर्य महासम्मेलन में भी आप का पूरा पूरा सहयोग मिलेगा।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे।
प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः।।

-ऋ० १.९१.६

भावार्थ-जो मनुष्य परमेश्वर की भक्ति करते हैं और उसकी वैदिक आज्ञा के अनुसार अपना जीवन बनाते हुए उसके नियमानुकूल चलते हैं, वे पूरी आयु पाते हैं और इस भौतिक देह को त्याग कर मुक्तिधाम को प्राप्त होते हैं।

सोम यास्ते मयोभुव ऊतयः सन्ति दाशुषे।
ताभिर्नोऽविता भव।।

-ऋ० १.९१.९

भावार्थ-हे परमात्मन्! आप का नियम है, कि जो यज्ञ दानादि उत्तम वैदिक कर्म करने वाले धर्मात्मा पुरुष हैं, उनकी आप सदा रक्षा करते हैं। उन रक्षा आदि क्रियाओं से आप हम भक्तों की रक्षा कीजिये।

ईश्वर का स्कम्भ रूप व वेद

ले.-आचार्य सूर्यादेवी चतुर्वेदा प्राचार्या-वाराणसी

परमेश्वर अन्तरहित है, अनन्त है। जगत् का प्रत्येक पदार्थ उससे ही अभिव्याप्त है। अनन्त परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव भी अनन्त हैं। इस अनन्तता के कारण ईश्वर के अनन्त स्वरूपों में एक स्वरूप स्कम्भ भी है।

स्कम्भ व्युत्पति व अर्थ

स्कम्भ शब्द स्कभि प्रतिबन्धे भ्वादिगणीय धातु से घञ् प्रत्यय द्वारा निष्पन्न होता है। स्कम्भ शब्द की व्युत्पत्ति है-

यः स्कम्भते प्रतिबध्नाति सः स्कम्भः।

अर्थात् जो प्रतिबन्धित करता है, व्यवस्था देता है, नियम में रखता है, वह स्कम्भ कहाता है।

तात्पर्य हुआ प्रतिबन्ध= आलम्ब, आधार, सहारा, थूणी, बांधने वाला, पदार्थों की अपने-अपने नियम में रुकावट करने वाला, नियत व्यवस्था, स्थान में रखने वाला स्कम्भ होता है।

वैदिक वाङ्मय में स्कम्भ

निष्कर्षतः सर्वाधार का नाम स्कम्भ है। सर्वाधार परमेश्वर है। सम्पूर्ण जगत् के पदार्थों को अपनी-अपनी व्यवस्था में रखने का कार्य ईश्वर ही करता है। वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में ईश्वर के इस स्कम्भ=सर्वाधार स्वरूप का भली भाँति निर्देश है।

अथर्ववेद में स्कम्भ

परमेश्वर के स्कम्भ= सर्वाधार स्वरूप का अथर्ववेद के १०वें काण्ड के ७वें सूक्त में तो अत्यन्त विस्तार से प्रतिपादन है। इस सूक्त में ४४ मन्त्र हैं। सूक्त के ४, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १८, १९, २०, २२, ३८= १६ मन्त्रों की टेक स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः इस प्रकार की है। मन्त्रों की इस टेक में कतमः शब्द प्रयुक्त है, जो किम् शब्द एवं सुखवाचक कः शब्द से अतिशय अर्थ में तमप् प्रत्यय द्वारा सिद्ध होता है।

इस प्रकार इस टेक में प्रश्न भी है कि वह स्कम्भ कौन है? और यह निर्देश भी है कि सर्वतः सुखदायी ईश्वर स्कम्भ है= सर्वाधार है, वह सर्वाधार सुखस्वरूप है।

स्कम्भ की ज्येष्ठ ब्रह्म संज्ञा

स्कम्भ = सर्वाधार ईश्वर को अथर्ववेद के १०वें काण्ड के, ७वें सूक्त में ज्येष्ठ ब्रह्म भी कहा है।' ब्रह्म बड़े को कहते हैं। ईश्वर सबसे बड़ा है, अतः बड़े होने से सम्पूर्ण जगत् को वह स्कम्भ ब्रह्म सबको धारण करता है, सबका आधार बनता है। जगत् के जड़, चेतन पदार्थों को उनकी अपनी-अपनी नियत व्यवस्था में रोककर=थामकर रखता है। स्कम्भ = धारक शक्ति वाला ब्रह्म धारण न करे, तो अधर में लटके सूर्य, चन्द्र, तारे, नक्षत्र आदि कभी निराधार टिके नहीं रह सकते।

ऋत = शाश्वत नियम, सत्य, श्रद्धा, तप आदि सभी कुछ स्कम्भ ब्रह्म में ही प्रतिष्ठित हैं। मन्त्र है-

यत्र तपः पराक्रम्य व्रतं धारयत्युत्तरम्।
ऋतं व यत्र श्रद्धा चापो ब्रह्म समाहिताः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।
अथर्व० १०/७/११।।

अर्थात् यत्र= जिस सामर्थ्य में, तपः = ज्ञानरूप ताप को, पराक्रम्य=पराक्रम = चारों ओर से घेर के, उत्तरं व्रतम् = उत्कृष्ट कर्म को, धारयति = धारण करता है, यत्र = जिसमें, ऋतं = शाश्वत नियम, च = और, श्रद्धा = सत्य व सत्य धारण करने का सामर्थ्य, च = और, आपः = प्रकृति, जल व आप्त जन एवं ब्रह्म = अन्न, समाहिताः = स्थित हैं, तम् = उसको, स्कम्भं = धारक, ब्रूहि = कहो, सः = वह, स्वित् = निश्चय से, कतमः एव = सुख-स्वरूप ही है।

मन्त्र का तात्पर्य है ज्ञान, उत्तम कर्म, नियम, सत्य, व्यापक पदार्थ, अन्न सभी स्कम्भम् = धारक ईश्वर में ही स्थित हैं। लोक में तप, ज्ञानमय जिनका जीवन होता है, उनमें उत्तम कर्म करने के सामर्थ्य होते हैं। तपोमय, दीप्तियुक्त, ज्ञानपूर्ण जीवन उनका ही होता है, जो स्कम्भम् = सर्वाधार ईश्वर की उपासना करते हैं।

स्कम्भ ब्रह्म में ही अर्धमास, मास, ऋतु, वर्ष, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र लोक लोकान्तर स्थित हैं। स्कम्भ परमेश्वर ने ही कारण प्रकृति से अनेक प्रकार का यह जगत् बनाया है। स्कम्भ ब्रह्म का सिर वैश्वानर अग्नि एवं चक्षु = आंख अंगिरसः = सूर्य की रश्मियाँ कही जाती हैं। स्कम्भ का मुख ब्रह्म = वेदज्ञान या अथर्ववेद है एवं उसकी जिह्वा मधुकशा विद्या है। समुद्र आदि जल स्रोत, दिशाये उस स्कम्भ के नाड़ियों के सदृश हैं।

तात्पर्य स्पष्ट है जगत् का प्रति पदार्थ निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार, परमेश्वर में ही समाहित है, स्थित है। सभी पदार्थ उस स्कम्भ = धारक की शक्ति से ही शक्तिमान् हैं, संप्रेरित हैं, स्वतः नहीं।

उपासकों की भूल

वेद के इतने स्पष्ट निर्देश, उपदेश होने पर भी उपासक जन भूल कर बैठते हैं। ब्रह्म सबसे बड़ा स्कम्भ = महान् धारक ईश्वर है, तो भी उस की उपासना न करके जड़ प्रकृति की उपासना में रत हो जाते हैं। प्रकृति उपासकों का निर्देशक स्कम्भ सूक्त का मन्त्र हैं-

असच्छाखां प्रतिष्ठन्तीं परममिव जना विदुः।
उतो सन्मन्यन्तेवरे ये ते शाखामुपासते।।
अथर्व. १०/७/२१।।

अर्थात् असत् शाखाम् = उत्पत्ति रहित शाखा रूप, प्रतिष्ठन्तीम् = स्थिर कारण प्रकृति को, जनाः = बहुत से जन, परमम् इव = परम तत्त्व ईश्वर के सदृश, विदुः = जानने वाले होते हैं, उत = और, ये = जो कारण प्रकृति को मानने वालों से अतिरिक्त, अवरे = इतर जन हैं, ते = वे, सत् = प्रकृति से उत्पन्न पदार्थ रूप में स्थित जगत् को परम तत्त्व, मन्यन्ते = मानते हैं, अन्यच्च प्रकृति के इन, शाखाम् = कारण एवं अभिव्यक्त शाखा रूप भेदों की, उपासते = उपासना में संलग्न रहते हैं।

मन्त्र से स्पष्ट है प्रकृति की साम्यावस्था = कारणरूपता, विषमावस्था = उत्पत्तिरूपता दो अवस्थायें हैं। प्रकृति के इन दो स्वरूपों को ही उपासक परमतत्त्व मान बैठते हैं, कारण प्रकृति से उत्पन्न जगत् में अभिव्याप्त परमतत्त्व ईश्वर को नहीं समझ पाते। इस नासझी से उनकी उपासना में भूल हो जाती है। जिस भूल से वे परम तत्त्व से सदा ही दूरातिदूर रहते हैं।

परमतत्त्व ज्ञाता कौन ?

परमतत्त्व ईश्वर को कौन जान पाते हैं ? इसका निर्देश भी अथर्ववेद के इस सूक्त में निर्दिष्ट है। मन्त्र है-

ये पुरुषे ब्रह्म विदुस्ते विदुः परमेष्ठिनम्।
यो वेद परमेष्ठिनं यश्च वेद प्रजापतिम्।
ज्येष्ठं ये ब्राह्मणं विदुस्ते स्कम्भमनुसंविदुः।।
अथर्व० १०/७/१७।।

अर्थात् ये = जो, पुरुषे = शरीर रूप पुर में शयन करने वाले जीवात्मा में स्थित, ब्रह्म = ब्रह्म को, विदुः = जान लेते हैं, ते = वे ही, परमेष्ठिनम् = ईश्वर में स्थित ईश्वर के परमेष्ठी स्वरूप को, वेद = जानता है, यः = जो, प्रजापतिम् = प्रकृति से जन्य पदार्थों के पालक परमतत्त्व के प्रजापतिरूप को, वेद = जानता है, एवं ये = जो, ब्राह्मणाम् = वेद ज्ञान के ज्ञाता, प्रदाता रूप, ज्येष्ठम् = सर्वोत्तम स्वरूप को, विदुः = पहचान लेते हैं, ते = वे ही, स्कम्भम् = स्कम्भ = धारक ब्रह्म के, अनु = स्वरूपानुकूल जो रूप है, उस स्वरूप को, संविदुः = भली प्रकार से, सम्यग् रूप से जानते हैं।

मन्त्र का तात्पर्य है ईश्वर, जीव, प्रकृति-ये तीन अनादि तत्त्व हैं। इन तीनों में ईश्वर सर्वव्यापक है। जीव व प्रकृति में ईश्वर व्यापक है। ईश्वर की जीव सम्बन्धी व्यापकता, परमेष्ठी रूप है। यहाँ परमेष्ठी शब्द गत परम शब्द जीवात्मा का वाचक है, क्योंकि जीव प्रकृति से परम है, अति उत्तम है। परमेश्वर की प्रकृति सम्बन्धी व्यापकता प्रजापति कही जाती है। प्रकृति से उत्पन्न हमारे शरीर व जगत् के अन्य सभी पदार्थों को ईश्वर उत्पन्न करता है, तो वे उत्पन्न पदार्थ प्रजा कहे जाते हैं, उनमें व्याप्त ईश्वर प्रजापति कहा जाता है। परमेष्ठी एवं प्रजापति स्वरूपों के अतिरिक्त ईश्वर का एक स्वरूप ब्राह्मणम् = वेदज्ञ व वेदज्ञान देने वाला रूप है। यह ईश्वर का ब्राह्मणम् = वेदज्ञ व वेदज्ञान प्रदान का स्वरूप ज्येष्ठ है। इस ज्येष्ठ स्वरूप को जानने के पश्चात् ही ईश्वर का स्कम्भ = धारक स्वरूप समझ आता है। जो ईश्वर के ब्राह्मणम् स्वरूप को जान लेता है, वह ही परमेश्वर का ज्ञाता होता है।

मन्त्र से स्पष्ट हुआ परमेश्वर को जानने के लिए इधर उधर भटकने की आवश्यकता नहीं है, और न अपने को पीड़ित करने की आवश्यकता है। मन्त्रोक्त स्वरूपों को जानने से ईश्वर की प्राप्ति अवश्यम्भावी है।

ईश्वर प्राप्ति के अन्य उपाय अनर्थक

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(सम्पादकीय)

ग्रीष्मकालीन अवकाश में चरित्र निर्माण शिविर लगाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से विशेष निवेदन है कि युवाओं के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए एवं उनके अन्दर नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए आने वाली गर्मियों की छुट्टियों में अपनी-अपनी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं में चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन करें। युवा पीढ़ी ही राष्ट्र एवं समाज का भविष्य है। सामाजिक उन्नति के लिए युवाओं का चरित्रवान एवं राष्ट्रभक्त होना आवश्यक है। जिस राष्ट्र की युवा पीढ़ी चरित्रवान एवं राष्ट्रभक्त होती है वह राष्ट्र सदैव उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। चरित्र के विकास के लिए इच्छा शक्ति का होना बहुत आवश्यक है। जिसमें इच्छा शक्ति का अभाव होता है, वह व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता। जो अपने संकल्पों पर दृढ़ नहीं रह सकता, जिसका अपना कोई स्थाई सिद्धान्त नहीं होता, जो अपनी बुद्धि का सदुपयोग नहीं करता, उस व्यक्ति में इच्छा शक्ति का अभाव होता है। ऐसे मनुष्य किसी भी बड़े कार्य को करने में अक्षम होते हैं। ऐसे व्यक्ति किसी का भला नहीं कर सकते। ऐसे व्यक्तियों से अपना भला नहीं होता तो वे समाज का क्या भला कर सकते हैं। एक चरित्रवान व्यक्ति के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति का होना अति आवश्यक है। बालकों को अपना निर्माण करने का अवसर देना चाहिए। जो लोग उन्हें अपना आत्मनिर्माण करने का मौका नहीं देते, कठिनाईयों को सहन करने का अवसर नहीं देते, ऐसे लोग उनके चरित्र विकास तथा उन्नति में सबसे बड़े बाधक बनते हैं।

राष्ट्र की उन्नति के लिए नैतिक मूल्यों से युक्त चरित्रवान युवा पीढ़ी का होना अति आवश्यक है। युवा पीढ़ी किसी भी राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति होती है। जो इस युवा पीढ़ी को बर्बाद कर देता है, नशे की दलदल में धकेल देता है, वह राष्ट्र कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। वर्तमान समय में युवा पीढी को नशे से बचाने की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज की युवा पीढ़ी को उसके कर्त्तव्य का बोध कराने वाला कोई नहीं है। स्कूल में भी इस प्रकार की शिक्षा नहीं मिल रही है जिससे विद्यार्थी के अन्दर अच्छे गुण विकसित हो, उसके अन्दर नैतिक मूल्यों की वृद्धि हो। आज की युवा पीढी को चरित्रवान बनाने के लिए माता-पिता और अध्यापकों को अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। किसी भी बालक के जीवन निर्माण में उसके माता-पिता और अध्यापकों की प्रमुख भूमिका रहती है। जो इस भूमिका को निभाते हैं, अपने कर्त्तव्य का वहन करते हैं, वे राष्ट्र की उन्नति और तरक्की में अपना योगदान देते हैं। इसलिए माता पिता और अध्यापकों का कर्त्तव्य है कि वे अपने-अपने कर्त्तव्यों को निभाते हुए बालक और बालिकाओं में ऐसी इच्छा शक्ति उत्पन्न करें, ऐसा आत्मविश्वास जागृत करें जिससे वे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने पथ से विचलित न हो सके। आत्मविश्वास से युक्त बालक असम्भव से असम्भव कार्य को करने की क्षमता रखता है।

जीवन में कई अवसर आते हैं जब हमारे सामने निर्णय लेना कठिन हो जाता है। अनिश्चय की स्थिति में मनुष्य की समझ में कुछ नहीं आता। मनुष्य सोचता है, विचारता है, सभी प्रकार की युक्तियों का सहारा लेता है और तब अन्तर्द्वन्द के पश्चात किसी एक निर्णय पर पहुंचता है। यह निर्णय हमारी इच्छा शक्ति करती है। युद्ध के लिए तैयार अर्जुन के सामने एक समय ऐसा ही संकट उत्पन्न हुआ था। उसके सम्मुख प्रश्न था कि वह धर्म युद्ध करके अपने आत्मीय जनों की हत्या करे या आत्मीयता के मोह में पड़कर अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाए। सोचा समझा, योगेश्वर श्री कृष्ण के उपदेश को सुना और अन्त में निश्चय किया कि मैं युद्ध में भाग लेकर अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करूंगा।

अच्छे चरित्र के निर्माण के लिए इच्छा शक्ति का होना अति आवश्यक है। जो व्यक्ति दृढ़ निश्चय नहीं कर पाता, जो अपने किसी कार्य को तन्मयता के साथ नहीं करता, उसका व्यक्तित्व प्रभावहीन होता है तथा चरित्र दुर्बल होता है। दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा मनुष्य अपने जीवन में परिवर्तन ला सकता है। जिस व्यक्ति को नशे का सेवन करने या किसी प्रकार के दुर्व्यसन की आदत पड़ गई हैं, ऐसे मनुष्य भी दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा इस आदत से छुटकारा पा सकते हैं। मनुष्य अगर अपनी इच्छा शक्ति को दृढ़ बना ले और संकल्प धारण कर ले तो असम्भव कार्य को भी सम्भव बना लेता है। नीतिकारों का कहना है कि मनुष्य के सभी कार्य दृढ़ इच्छा शक्ति और पुरूषार्थ से ही सम्पन्न होते हैं। जो व्यक्ति किसी लक्ष्य को लेकर संकल्प करते हैं और उसे पूरा करने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देते हैं ऐसे मनुष्य ही राष्ट्र की उन्नति में सहायक होते हैं और राष्ट्र का गौरव बनते हैं। आने वाली पीढ़ियां ऐसे लोगों को अपना आदर्श बनाती हैं और उनके मार्ग का अनुसरण करती हैं। वही राष्ट्र उन्नति कर सकता है जिस राष्ट्र के लोग दृढ़ इच्छा शक्ति से युक्त तथा चरित्रवान होते हैं। ऐसे लोगों के द्वारा राष्ट्र का गौरव बढ़ता है।

आज हमारे देश के नवयुवक इन्जीनियरिंग, विज्ञान, कृषि आदि सभी क्षेत्रों में उन्नति कर रहे हैं परन्तु दुर्भाग्यवश भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और बेईमानी बढ़ रही है। इसका एकमात्र कारण यह है कि नवयुवकों के चरित्र निर्माण की ओर किसी का ध्यान नहीं है। कभी हमारा देश जिस चरित्र की महानता के लिए विश्व में प्रसिद्ध था आज उसी देश के चारित्रिक मूल्यों का दिन-प्रतिदिन पतन हो रहा है। चारित्रिक मूल्यों का पतन होने के कारण ही हमारा सांस्कृतिक पतन हो रहा है, हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। चरित्र के नष्ट हो जाने से सब कुछ नष्ट हो जाता है।

आज देश के गिरते हुए नैतिक स्तर को उठाने के लिए बालकों का चरित्रवान बनना परमावश्यक है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजें एवं शिक्षण संस्थाएं इस कार्य की ओर विशेष ध्यान दें। युवा पीढ़ी के अन्दर नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए एवं चरित्रवान बनाने के लिए ग्रीष्मकालीन अवकाश में अपने-अपने जिलों में वैदिक चेतना शिविर, आर्य वीर दल शिविर, युवा चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन करें। युवाओं को अपनी मुख्य वैदिक विचारधारा से जोड़ने के लिए सभी आर्य समाजें एवं शिक्षण संस्थाएं विशेष ध्यान दें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इस कार्य के लिए आपको हर प्रकार से सहायता देगी। सभा में बाल सत्यार्थ प्रकाश और अन्य वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराने वाला साहित्य हमेशा उपलब्ध है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के छठे नियम में निर्देश दिया है कि उन्नति तीन प्रकार की होती है-शारीरिक उन्नति, आत्मिक उन्नति एवं सामाजिक उन्नति। आज की युवा पीढ़ी की शारीरिक उन्नति के लिए उन्हें नशे जैसी बुराईयों से दूर करना है, आत्मिक उन्नति के लिए वैदिक सिद्धान्तों से युक्त शिक्षा देने की जरूरत है। जब युवा शारीरिक एवं आत्मिक रूप से उन्नत होगा तो सामाजिक उन्नति स्वयं ही हो जाएगी।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

समाजोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ले.-डॉ. निर्मल कौशिक निर्देशक, कर्मशीला संस्कृत विकास मंच १६३, आदर्श नगर, ओल्ड कैंट रोड, फरीदकोट

भारत में समय समय पर अनेक महापुरुषों, सिद्ध साधकों, ऋषि मुनियों ने जन्म लिया। इन महामानवों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए आत्म बलिदान तक दे डाला। अपने तप और त्याग से मानवता का मार्ग प्रशस्त किया। इतिहास साक्षी है कि जब-२ भी मानव समाज में उच्छृंखलता और उद्दण्डता बढ़ी है तब तब मानवीय जीवन मूल्यों के संरक्षण हेतु किसी न किसी युगपुरुष का जन्म हुआ है।

महर्षि दयानन्द का जन्म भी अधर्म का नाश करने और धर्म की स्थापना करने हेतु हुआ था।

महर्षि दयानन्द का जन्म संवत् १८८१ में गुजरात के टंकारा नामक ग्राम में एक परम्परावादी ब्राह्मण श्री कर्षण लाल जी त्रिवेदी के घर हुआ। जो कि एक बहुत बड़े भूमिधर थे। उनका पहला नाम मूलशंकर था। बालक मूलशंकर आरम्भ से ही मेधावी था। चौदह वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने बहुत से शास्त्र व ग्रन्थ कण्ठस्थ कर लिये थे। स्वामी जी के पिता शैव धर्म के उपासक थे। उन्होंने एक दिन मूलशंकर से शिवरात्रि का व्रत करने को कहा। वे अपने पिता के साथ शिवालय चले गये। उन्हें समझाया गया कि रात भर जागना होगा। सब लोग सो गये। लेकिन बालक मूलशंकर जागते रहे। उन्होंने देखा कि शिवलिंग पर चूहे चढ़ आये है और मूर्ति पर चढ़ाई गई मिठाई को खा रहे है। इस घटना से स्वामी जी के मन में अनेक शंकाएं उत्पन्न हुई। पिता ने अनेक युक्तियों से समाधान करना चाहा लेकिन बालक का समाधान न हो सका।

कुछ दिन बाद उनकी १४ वर्षीय बहन तथा उनके पूज्य चाचा की मृत्यु ने मूलशंकर के हृदय में सच्चे वैराग्य को पैदा कर दिया। उन्होंने अमरत्व को प्राप्त करने के लिये योग धर्म का मार्ग अवलम्बन करने तथा आजीवन विवाह न करने का दृढ़ निश्चय कर लिया और २२ वर्ष की आयु में विवाह के उत्सव से सुशोभित घर से निकल पड़े। दो वर्ष निरन्तर भ्रमण के पश्चात चाणोद गांव के समीप दक्षिण के दण्डी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी से इनकी भेंट हुई। उन्होंने इनको विधिपूर्वक सन्यास की दीक्षा दी। अब ये मूलशंकर से दयानन्द 'सरस्वती' बन गये।

सन्यास लेने के बाद अनेक साधु सन्यासियों के दर्शन करने के बाद मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी से इनकी भेंट हुई। दयानन्द का विरजानन्द जी से मिलना 'रत्न समागच्छ काञ्चनेन' के अनुसार रत्न और सुवर्ण के मेल के समान था। ढाई वर्ष तक स्वामी जी शास्त्रों का अध्ययन करते रहे। शिक्षा समाप्ति पर वे शिष्यों से लौंग भेंट लिया करते थे किन्तु उन्होंने दयानन्द जी से भेंट के रूप में मांगा कि 'तुम संसार में फैले अन्धकार को मिटाकर सच्चे ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित करो।'

१९२४ में आप हरिद्वार के कुम्भ के मेले में गये और वहाँ पाखण्ड खंडिनी पताका स्थापित कर वैदिक धर्म का प्रचार आरम्भ किया। उन्होंने अनेक स्थानों पर जाकर मूर्ति पूजा का खण्डन कर जनता को ईश्वर का वास्तविक रूप समझाया। उनके विचार में ईश्वर विश्वात्मा है, सत् चित आनन्द है वह असीम अमर निराकार व सर्वव्यापक है। वह संसार का जनक और रक्षक है। उन्होंने बाल विवाह, अनमेल विवाह, जाति, पाति और छूआ छूत का विरोध किया। अन्ध विश्वासों और मिथ्या धारणाओं का खण्डन किया। लोगों को यज्ञोपवीत धारण करवाया, सन्ध्या सिखाई एवं गायत्री का जप बताया और लाखों को अपने सदुपदेश से सन्मार्ग बताया। उन्होंने बताया कि वर्ण गुण और कर्म से होते है जन्म से नहीं। उन्होंने हजारों हिन्दुओं को मुस्लमान और ईसाई बनने से बचाया।

स्वामी दयानन्द जी के अनुसार जीवन में सद्व्यवहार ही धर्म है। यह प्यार भ्रातृभाव, निर्धनों तथा दीन दुखियों के प्रति दया पर आधारित है। उससे मुक्ति प्राप्ति में सहायता मिलती है। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करते हुये स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा का प्रबल समर्थन किया। उन्होंने कहा कि जिस क्षेत्र में सद्गुरुओं का अभाव हो जाता है। ईमानदार श्रोता नहीं मिलते, वहाँ अन्धविश्वास फैल जाता है। उन्होंने कहा कि गुरु और शिष्ट सदगुणों को ग्रहण करें। गुरु अपने शिष्यों को मन वचन और कर्म से सच्चा बनाने का यत्न करें। शिष्य आत्मसंयमी, शान्त, गुरु भक्त, विचारशील और परिश्रमी बने। स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा का प्रबल समर्थन किया और कहा (भला जो पुरुष विद्वान और स्त्री अविदुषी और स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान हो तो नित्य प्रति देवासुर संग्राम मचा रहेगा। उन्होंने घोषणा की कि वह एक बड़ा अन्याय है कि स्त्रियों को घरों के भीतर कैदी की भाँति रखा जाये और पुरुष स्वतन्त्र आते जाते रहे। उन्होंने सह शिक्षा का घोर विरोध किया और कहा कि लड़कों लड़कियों के स्कूल दो कोस की दूरी पर होने चाहिए।

शारीरिक शिक्षा के विकास की ओर ध्यान देते हुये उन्होंने कहा कि शारीरिक बल और स्फूर्ति की वृद्धि से बुद्धि इतनी सूक्ष्म हो जाती है कि वह अत्यन्त जटिल और गहन और गम्भीर विषयों को भी ग्रहण कर सकती है। अतः लड़कों और लड़कियों को प्राणायाम करना चाहिए। स्वामी दयानन्द जी ने राष्ट्रीय एकता के लिये जो अपील की थी हमारे युग में उसका एक विशेष महत्व है। उन्होंने कहा भाषायी मतभेदों, सांस्कृतिक हदों और रीति रिवाजों से उत्पन्न अलगावों को छोड़ना कठिन प्रतीत होता है। जब तक यह काम नहीं किया जायेगा तब तक पूरा लाभ लेना और लक्ष्य को प्राप्त करना बहुत ही कठिन है। उन्होंने विदेशी भाषाओं को शिक्षा के माध्यम अपनाने का विरोध किया। उन्होंने कहा कि अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिये भारतीय भाषाओं तथा संस्कृत को देश के लोगों द्वारा अपनाया जाना चाहिए।

महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना करके इनके द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार, समाज सुधार, दलितोंद्धार आर्य भाषा (हिन्दी) का प्रसार आदि का सूत्रपात किया। प्राचीन भारतीय धर्म और संस्कृति का वास्तविक स्वरूप दिखा कर सच्ची देश भक्ति की भावना उन लोगों में पुनः भरी जो पाश्चात्य सभ्यता के प्रवाह में बहे जा रहे थे।

इस प्रकार वैदिक धर्म का प्रचार करके समाज सुधार करते हुए वे कई स्वार्थप्रिय व्यक्तियों के कोपभाजन बने। उन्हें कई बार मारने का प्रयत्न किया गया, गंगा में फैंकने और तलवार से मारने का प्रयत्न किया गया। उन पर पत्थर फैंके गये और विष दिया गया। अन्त में उनके धन के लोभी रसोईये जगन्नाथ द्वारा दूध में जहर दिये जाने से सम्वत् १९४० में दीपावली के दिन उन्होंने इस नश्वर शरीर को छोड़ दिया।

महर्षि दयानन्द आधुनिक भारत के धर्म सुधारक, क्रान्तिकारी, सन्यासी, आध्यात्मिक नेता, योगी, दार्शनिक तथा देशभक्त थे। मानव जाति के हितैषी के रूप में उनका जन्म हुआ। वे राष्ट्रीय स्थिरता, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं विश्व-बन्धुत्व के पक्षधर थे। सच्चे अर्थों में वे एक समाजोद्धारक थे।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

ऋग्वेद में सोमपान

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

वैदिक वाङ्मय में सोमपान की जगह-जगह चर्चा हुई है। यह एक सोम नामक ओषधी से बनाया गया पेय पदार्थ होता था। इसके पान करने से मस्तिष्क की थकान दूर हो जाती थी और मन में कार्य करने के प्रति उत्साह उत्पन्न हो जाता था। फिर मनुष्य एकाग्र चित्त होकर अपने कार्य को सरलता से कर लेने में सफलता अनुभव करता था। वर्तमान में इस ओषधी के विषय में लोगों को जानकारी नहीं है।

ऋग्वेद मण्डल 10 के सूक्त 119 में तेरह ऋचाओं के द्वारा सोम के विषय में वर्णन किया गया है। इस सूत्र के ऋषि लव ऐन्द्र तथा देवता आत्म स्तुति है। 1 से 5 तथा 7 से 10 तक की ऋचाएं गायत्री छन्द में ऋचा संख्या 6, 12, 13 निचृदगायत्री में तथा ग्यारहवीं ऋचा विराट् गायत्री छन्द में है।

इति वा इति मे मनो गामश्र्वे सनुयामिति।

कुवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.1

अर्थ-(सोमस्य कुवित्) सोम को भली प्रकार (अपाम्) पिया अतः (मे मनः) मेरा मन (गाम् वा अश्वम्) गो अथवा अश्व को (सनुयाम्) याचकों को दान दूं (इति) ऐसा होता है।

भावार्थ-सोमपान करने से मन में उदात्त भावना उदय होती है। परोपकार में मन लगता है। दान देने की इच्छा उत्पन्न होती है।

प्र वाताइव दोधत उन्मा पीता अयंसत।

कुवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.2

अर्थ-(पीताः) पान किए गए सोम (मा) मुझको (प्रवाताः इव) प्रबल वायुओं के समान, तेज आंधी के समान (दोधत्) कंपाते हुए (उत अयंसत) उन्नति की ओर ले जा रहे हैं। (कुवित् सोमस्यापाम) मैंने सोमरस पिया है।

भावार्थ-सोमपान से चित्त एकाग्र हो जाता है और मनुष्य ईश्वर आराधना में संलग्न हो जाता है।

उन्मा पीता अयंसव रथमश्र्वा इवा शवः।

कुवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.3

अर्थ-(आशवः अश्वाः रथम् इव) शीघ्रगामी घोड़े, जैसे रथ को वैसे ही (पीताः) पीये गए सोम (मा, उत्, अयंसत) मुझे ऊपर उठा रहे हैं। (कुवित्सोमस्यापामिति) क्योंकि मैंने सोम पान किया है।

भावार्थ-सोमपान के बाद प्रभु आराधन से आराधक के भाव बहुत उन्नत हो जाते हैं। वह प्रभु-मिलन की राह पर चल पड़ता है।

उप मा मतिरस्थित वाश्रा पुत्रमिव प्रियम्।

कुंवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.4

अर्थ-(वाश्रा) बड़ी उमंगों वाली माता (प्रियम् पुत्रम् इव) जैसे प्यारे पुत्र को उपस्थित होती है (मा) मुझे (मतिः) बुद्धि (उपस्थित) प्राप्त हुई है, स्नेह भरी बुद्धि सर्व लोकप्रिय मति हो गई है क्योंकि (कुवित् सोममपाम्) मैने सोम रस का पान किया है।

भावार्थ-सोमपान करने से मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है और वह सर्व प्रियमति बन जाती है। आगे की ऋचाओं में भी इसी प्रकार की भावनाओं का वर्णन है।

अहं तष्टेव बन्धुरं पर्यचामि हृदा मतिम्।

कुवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.5

अर्थ-(तष्टा इव) शिल्पकार के समान (बन्धुम्) रथ को (हृदा) हृदय से (मतिम्) ज्ञान को (पि अचामि) ग्रहण करता हूँ। (इति कुवित् सोममपाम्) क्योंकि मैंने सोमरस का पान किया है।

भावार्थ-सोमरस पान करने से मनुष्य शिल्पकार के समान हृदय से ज्ञान को ग्रहण करने लग जाता है।

नहि मे अक्षिपच्चनाच्छान्त्सुः पञ्च कृष्टयः।

कुवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.6

अर्थ-(पञ्च कृष्टयः) पांच आकर्षक अर्थात् इन्द्रियां (मे) मेरे लिए, मुझे (न अक्षिपात्चन) कभी चलायमान नहीं कर सकती (नहि अच्छान्त्सुः) और न लुभा सकती है (इति) ऐसा है क्योंकि (कुवित् सोममपाम्) मैंने सोमरस पीया है।

भावार्थ-सोमरस पीने कारण पांचों ज्ञानेन्द्रियां मुझे चलायमान नहीं कर सकती है और न ही वे लुभा सकती हैं।

न हि मे रोदसी उभे अन्यं पक्षं चन इति।

कुवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.7

अर्थ-(न हि मे रोदसी उभे) मेरे लिए भूमि और सूर्य दोनों (अन्यं, पक्षं च न प्रति) एक पक्ष के एक बाजू के तुल्य भी नहीं है क्योंकि मैंने (कुवित् सोममपाम्) सोम रस का पान किया है।

भावार्थ-सोमपान करने से मनुष्य की आत्मशक्ति इतनी बढ़ जाती है कि वह पृथ्वी और सूर्य से भी अपने को अधिक बलशाली मान लेता है।

अभि द्यां महिना भुवमभी ३ मां पृथिवी महीम्।

कुवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.8

अर्थ-(महिना) मैं अपनी बड़ी शक्ति से (द्याम अभि भुवम्) द्युलोक और भूलोक को (इमां महीम् पृथिवीम्) इस महती पृथ्वी को कुछ नहीं गिनता, क्योंकि (कुवित् सोममपाम्) मैंने सोमपान किया है।

हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानोह वेह वा।

कुवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.9

अर्थ-(हन्त) हर्ष है कि (अहम्) मैं (इमाम् पृथ्वीम्) इस पृथ्वी को (इह वा वाइह) यहां का वहां (निदधानि) रख दूं क्योंकि मैंने (कुवित् सोममपाम्) सोमपान किया है।

भावार्थ-सोमपान करने पर व्यक्ति अपने को इतना बलशालीमान लेता है कि वह पृथ्वी को भी उठा कर स्थान से उठाकर अन्यत्र रख दे।

ओषमित्पृथिवीमहं जङ्घनानी ह वेह वा।

कृवित्सोमस्यापामिति।

ऋ. 10.119.10

अर्थ-(अहम्) मैं (पृथिवीम् इत्) इस भूमि को ही (इह वा वा इह) इधर का उधर (ओषम् जङ्न्धनानि) ताप से चोट पहुंचाऊं क्योंकि (कृवित् सोममपाम्) मैंने सोमपान किया है।

दिवि मे अन्यः पक्षो३ऽघो अन्यमचीकृषम्।

कृवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.11

अर्थ-(दिवि) द्युलोक में (मे) मेरा (अन्यः पक्षः) अन्य पंख है (अन्यम्) दूसरे पंख को (अधः) नीचे भूलोक में (अचीकृषम्) खींचा है क्योंकि मैंने (कुवित्सो-मपाम्) सोम पान किया है।

अहमस्मि महा महोऽभिनभ्य-मुदीषितः।

कृवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.12

अर्थ-(अहम्) मैं (महा मह अस्मि) महान् से भी महान हूँ। (अभिनभ्यम्) आकाश की ओर (उद् ईषितः) उदित हो रहा हूँ क्योंकि मैंने (कुवित् सोममपाम्) सोम पान किया है।

गृहो याम्यरङ्कृतो देवेभ्यो हव्यवाहनः।

कृवित्सोमस्यापामिति।।

ऋ. 10.119.13

अर्थ-(देवेभ्यः हव्य वाहनः) देवताओं के लिए हव्य पदार्थ पहुंचाने वाला (अरंकृतः) सुसज्जित मैं (गृहो यामि) घर को जाता हूँ क्योंकि मैंने (कुवित् अपाम् इति) सोमपान किया है।

इस सम्पूर्ण वर्णन से यह भी ज्ञात होता है कि सोम कोई नशीली वस्तु नहीं है।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

वर्षा जलभण्डारण एवं पुनर्भूजलभरण

ले.-पं. वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4E, कैलाशनगर, फाजिलका, पंजाब

वर्षा जल भण्डारण एवं पुन र्भूजलभरण हेतु आवश्यकता इस बात की है कि इसके शुभारम्भ हेतु उच्च स्तरीय वर्ग से मध्यम और फिर निम्नस्तरीय वर्गोन्मुख सूत्र को अपनाया जाये। इस सूत्र के अन्तर्गत अग्रलिखित उच्चतम, उच्चतर एवं उच्चस्तरीय वर्ग आ जाता है।

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री सहित लोकसभा, राज्य सभा के सभी मन्त्री, पक्ष-विपक्ष के सभी सांसद, सभी मन्त्रालयों के अधिकारी-कर्मचारी, सभी प्रान्तीय राज्यपाल, मुख्यमन्त्री, विधान सभा-विधानपरिषदों के विधायक, सभी सचिवालयों के अधिकारी-कर्मचारी, न्यायपालिका के न्यायाधीश-अधिवक्ता, उच्च-स्तरीय उद्योगपति, धनाढ्य, भूस्वामी, नेता, अभिनेता, व्यवसायी, शासकीय-प्रशासकीय अधिकारीवर्ग, किसी भी सरकारी गैर-सरकारी विभाग के अधिकारी, उच्च कम्पनियों में कार्यरत सरकारी/ गैर सरकारी/ व्यक्तिगत आवासों में वर्षा जल भण्डारण एवं आवश्यकतानुसार पुन र्भूजलभरण योजना को लगाना अतिशय अनिवार्यतम कर दिया जाय। निश्चित की गई अवधि तक कार्यपूर्ण न होने पर दण्ड का भी प्रावधान किया जाय। वह भी अपने उच्च-उच्चतर-उच्चतम पद के अनुसार हो। क्योंकि जो जितने उच्च पद पर है, वह कर्त्तव्य-पालन के प्रति उतना ही अधिक उत्तरदायी है। एक बात और यही लोग सर्वाधिक जल का उपयोग/ दुरुपयोग करते हैं।

जहां तक दण्ड का प्रश्न है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द कहते हैं-

''जिस अपराध में साधारण पर एक पैसा दण्ड हो, उसी अपराध में राजा पर सहस्त्र वैसा दण्ड अर्थात् साधारण मनुष्य से राजा पर सहस्त्र गुणा दण्ड होना चाहिए। दीवान अर्थात् राजा के मन्त्री को आठ सौ गुणा, उससे न्यून को सात गुणा..... दण्ड होना चाहिए। क्योंकि प्रजापुरुष से राजपुरुषों को अधिक दण्ड न देवे तो राजपुरुष प्रजापुरुषों का नाश कर देवें। जैसे सिंह अधिक और बकरी थोड़े से ही दण्ड से वश में आ जाती है। इसलिए राजा से लेकर छोटे से छोटे नृत्य तक राजपुरुषों को अपराध में प्रजा से अधिक दण्ड होना चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश समु. 6

दूसरी बात, उपर्युक्त वर्णित व्यक्तियों में से अधिकांशतः लोग सरका ी/अर्धसरकारी/उच्च-कर्म्चा ियों द्वारा प्रदत्त आवासों में रहते हैं। अतः खर्च भी उनको ही करना होगा। जिससे आवास प्राप्त व्यक्तियों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ना है। अतः आवास प्रदान करने वाली संस्थाएं/सरकारी जलभण्डारण/पुन र्भूजलभरण योजना को सुनिश्चित बनाकर लागू करें। जिससे अधिकांश वर्षा जल भण्डारित अथवा पुनः भूजल भरित हो सके। ऐसा होने पर जलभण्डारण/पुनर्भूजलभरण से जल स्तर स्वतः ही ऊपर आ जाएगा।

इसी प्रकार उच्चस्तरीय पब्लिक, माडल, कान्वेंट स्कूल, सभी कॉलेज, विश्वविद्यालय, संस्थान, सम्पन्न धार्मिक स्थल, आश्रम, औद्योगिक इकाइयों के लिए भी यह अनिवार्य होना चाहिए कि वे जलभण्डारण हेतु निर्धारित कदम उठाकर समय सीमा के अन्दर पूर्ण करें अन्यथा उचित कार्यवाई हेतु तैयार रहें।

यदि यह नियम लागू हो जाय तो भारत का अनुमानतः 30 प्रतिशत से भी अधिक उच्चस्तरीय वर्ग इसके अन्तर्गत आ जाएगा। जो समस्या के समाधान में पूर्णतः सहायक सिद्ध होगा।

अभ्यारण्य, वन्यक्षेत्र, बंजरभूमि, रेगिस्तान सदृश स्थानों/क्षेत्रों में स्थिति के अनुसार जलभण्डारण हेतु विशाल जलाशयों का निर्माण कर वर्षा जल का भंडारण किया जा सकता है। जहां अधिक बाढ़ आती है, वहां से बरसाती नहरों द्वारा जोड़ कर जलाशयों को भरा जाए। वर्षाकाल में भाखड़ा नंगल सदृश बांध के सागर में अधिक पानी भर जाता है। उसे पुनः नदी में न भेज कर निर्मित नहरों द्वारा समीपवर्ती बनाए गए जलाशयों को भर लिया जाय जो आवश्यकता पड़ने पर काम आए।

कहीं अधिक वर्षा, बाढ़ और कहीं बिल्कुल सूखा से निपटने का यहीं सर्वोत्तम उपाय है।

अधिक बाढ़ वाले क्षेत्रों में निर्धारित विधि से पानी को नलकूपों द्वारा पुनः भूमि के अन्दर पहुंचाया जा सकता है। यदि जल दोहन हो सकता है तो पुनर्भूजलभरण क्यों नहीं? इसमें तो बिजली की भी आवश्यकता नहीं होगी। नदियों के किनारे परिस्थिति अनुसार नलकूप उसी प्रकार लगाएं जाए जैसे छतों के पानी को भूमि के अन्दर जाने के लिए विधि अपनाई जाती है।

वस्तुतः यह कार्य सरकार का है जो योजनाबद्ध तरीके से अपनाया जाना चाहिए। इस विधि से निम्नस्तर पर पहुंचे जल पर नियन्त्रण पाया जा सकता है। इसके लिए पंच वर्षीय योजना बनाकर कार्यान्वित किया जा सकता है।

जैसे छतों के वर्षा जल भण्डारण हेतु प्रेरित किया जाता है वैसे ही कृषक वर्ग को भी प्रेरित किया जाय कि वे वर्षाकाल में अपने खेतों के पानी को व्यर्थ में न बह जाने दें। उन्हें चाहिए कि अपने खेतों के क्षेत्रफल के अनुसार मध्य में अथवा किनारे पर एक जलाशय अवश्य बनाएं। जिसमें वर्षा का जल एकत्रित हो। आवश्यकतानुसार उससे सिंचाई करें अथवा पुनर्भूजलभरण किया जा सकता है। खेतों में डाली गई खाद भी जल में घुलकर जलाशय में एकत्रित होगी। अतः खेत के लिए वह जल अधिक अन्नोत्पादन में सहायक होगा।

ईंट भट्ठों के समीप का क्षेत्र ईंटों के लिए मिट्टी निकाल लेने से खाली हो जाता है। उसे भी जलाशय हेतु प्रयोग किया जा सकता है। पहाड़ी क्षेत्रों में तो वर्षा का तमाम पानी नीचे की ओर बहता है, उसे भी निचले स्थान पर जलाशय बनाकर एकत्र किया जा सकता है। राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात जैसे राज्यों में अनेक ऐसे स्थान हैं, जहां प्रतिवर्ष सूखा पड़ता है और वर्षाकाल में बाढ़ आ जाती है। फिर ऐसे स्थानों पर जलाशय क्यों नहीं बनाए जाते? अथवा अनेक स्थानों पर पहले के ही बने तालाब, बावड़ी, कुओं का पुनरुद्धार क्यों नहीं किया जाता? जलाशयों के चारों ओर तो लोगों ने अवैध कब्जे कर लिए हैं। उन्हें हटा कर जलाशयों के आकार को पूर्ववत् किया जाय। जिससे उसमें अधिक मात्रा में जल एकत्रित हो सके। बावड़ियों और कुओं का पुनर्भूजलभरण हेतु भी प्रयोग किया जा सकता है।

परन्तु यह सरकार की कुव्यवस्था एवं उदासीनता का ही परिणाम है। 'का वर्षा जब कृषि सुखाने' महात्मा तुलसी दास का यह कथन अक्षरशः सत्य है। जनता प्यासी मरने लगती है। जब मौके पर पानी न मिले, जान चली जाय। बाद में तर्पण करते रहें। बाद में आंसू पोंछने अथवा मगरमच्छी आंसू बहाने के लिए टैंकरों अथवा रेलगाड़ियों से सप्ताह में दो चार दिन पानी भेजना भी इकट्ठी हुई भीड़ को मारामारी के लिए जन्म देता है। जितना बाल्टियों और घड़ों में पानी भरा जाता है, उससे कहीं अधिक नीचे बह जाता है। कइयों को तो पानी मिलता ही नहीं। सूखे की चपेट में आकर चुनावी वायदे सूख जाते हैं अथवा बाढ़ में बह जाते हैं। जनता चातक की तरह स्वाती नक्षत्र की ओर टकटकी लगाए रहती है। अगले पंच वर्षीय चुनावी वायदों की ओर।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

वेदवाणी

वह एक है!

**इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।**

-ऋ० १।१६४।४६; अथर्व० ९।१०।१८

ऋषि-**दीर्घतमाः**।। देवता-**सूर्यः**।। छन्दः-**निचृत्त्रिष्टुप्**।।

विनय-हे मनुष्यो! इस संसार में एक ही परमात्मा है। हम सब मनुष्यों का एक ही प्रभु है। हम चाहे किसी सम्प्रदाय, किसी पन्थ, किसी मत के मानने वाले हों, परन्तु संसार-भर के हम सब मनुष्यों का एक ही ईश्वर है। भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय वाले उसे भिन्न-भिन्न नाम से पुकारते हैं, परन्तु वह तो एक ही है। जो जिस देश में व जिस सम्प्रदाय के वायुमण्डल में रहा है, वह वहाँ के प्रचलित प्रभु नाम से उसे पुकारता है। कोई 'राम' कहता है, कोई 'शिव' कहता है, कोई 'अल्लाह' कहता है, कोई 'लॉर्ड' कहता है। 'विप्रों' ने, ज्ञानी पुरुषों ने, उस प्रभु को जिस रूप में देखा, उसके जिस गुणोत्कर्ष का उन्हें अनुभव हुआ, अपनी भाषा में उसी के वाचक शब्द से उसे वे पुकारने लगे। उन विप्रों द्वारा वही नाम उस समाज व सम्प्रदाय में फैल गया। कोई विप्र गुरु से ग्रहण करके उसे 'ओं' या 'नारायण' नाम से पुकारता है, तो कोई अपने महात्माओं और सद्ग्रन्थों से पाकर उसे 'खुदा' या 'रहीम' कहता है, परन्तु वह प्रभु एक ही है।

हम साम्प्रदायिक लोगों ने संसार में बड़े-बड़े उपद्रव किये हैं और आश्चर्य यह कि ये सब लड़ाई-दंगे अपने प्रभु के नाम पर हुए! वैष्णवों और शैवों के झगड़े हुए हैं, हिन्दू और मुसलमानों में रक्तपात हुए हैं, यहूदियों और ईसाइयों के युद्ध हुए हैं-यह सब क्यों। यह सब तभी होता है जब हम यह भूल जाते हैं कि ''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति''-वह एक ही है, परन्तु ज्ञानी लोगों ने अपने-अपने अनुभवों के अनुसार उसे भिन्न-भिन्न नाम दिया है। ईश्वर होने से वही 'इन्द्र' है, मृत्यु से त्राता होने से वही 'मित्र' है, पापनिवारक होने से वही 'वरुण' है, प्रकाशक होने से वही 'अग्नि' है। वेदमन्त्रों में इन नाना नामों से पुकारा जाता हुआ भी वह एक है। इसी प्रकार वेदमन्त्रों ने 'दिव्य', 'सुपर्ण' (शोभन पतन वाला) या 'गरुत्मान्' (गुरु आत्मा), 'अग्नि', 'यम' (नियन्ता) और 'मातरिश्वा' (अन्तरिक्ष में श्वसन करने वाला) आदि भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा, परन्तु अज्ञानियों ने उसे भिन्न-भिन्न नामों से पृथक्-पृथक् समझ लिया और पृथक्-पृथक् कर दिया। वेद की पुकार सुनो-वह एक है! वह एक है!-एकं सत्!

पृष्ठ 2 का शेष-ईश्वर का स्कम्भ...

वर्तमान में ईश्वर प्राप्ति के लिए अनेकों क्रियायें, उपाय अपनाएँ जा रहे हैं। कोई कावड़ उठाकर दौड़ रहा है, तो कोई नंगे पैर चल रहा है। बहुत से जन सड़क पर लेटकर अपनी शरीर की लम्बाई के अनुसार चिह्न लगाकर इच्छित मन्दिर तक पहुँचने का प्रयत्न कर रहे हैं। कोई जन जल चढ़ा रहे हैं, कोई मिष्टान्न बांट रहे हैं। कोई सिर के बाल अर्पित कर रहे हैं, ये सब कार्य अनर्थक, निरर्थक हैं, परमेश्वर की प्राप्ति के उपाय नहीं हैं।

ईश्वर की प्राप्ति तो वहीं होगी, जहाँ वह जीव स्वयं है। जीव शरीर में प्रतिबन्धित है। बाहर की प्रत्येक वस्तु में रहने वाला ईश्वर उस प्रतिबन्धित शरीर भी है। तो ईश्वर जीव को वहाँ ही प्राप्त होगा। इसीलिए तो स्कम्भ सूक्त के मन्त्र में कहा-

ये पुरुषे ब्रह्म विदुस्ते विदुः परमेष्ठिनम्।। अथर्व० १०/७/१७।।

इस प्रकार जीवों के शरीर में व्याप्त परमेष्ठी ब्रह्म को जानने के लोक के उपाय अनुचित उपाय हैं, वेदोक्त उपाय ही उचित उपाय हैं। वेदोक्त उचित उपाय तप करने, सत्य को धारण करने एवं उत्तम कर्म करने से अधिगत होते हैं, और परमेश्वर तक पहुचने में जीव समर्थ होते हैं।

शोक समाचार

आर्य समाज गुरदासपुर के वरिष्ठ सदस्य लाला कुआ दास जी महाजन का देहान्त तिथि 11-5-2018 हुआ। उन्होंने अपने जीवन काल में आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए अनथक मेहनत की उन्होंने दुनियावी कार्य से सन्यास लिया हुआ था और पिछले बीस वर्षो से तन, मन से आर्य समाज का ही काम किया चाहे उनकी आयु 91 वर्ष की हो गई थी पर आर्य समाज के कार्य में बहुत परिश्रम करते थे। उनके जाने से आर्य समाज गुरदासपुर को बहुत बड़ा धक्का लगा है।

हम सब उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते है और उनके परिवारिक सदस्यों को यह सदमा सहन करने का, प्रभु से प्रार्थना करते है। **-गुरवचन आर्य महामन्त्री**

आर्य समाज कमालपुर (होशियारपुर) के वरिष्ठ उपप्रधान नहीं रहे

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर (होशियारपुर) के वरिष्ठ उप प्रधान श्री जगदीश भाटिया का दिनांक 16-05-2018 को अकस्मात निधन हो गया, समाचार मिलते ही नगर में शोक की लहर फैल गई। श्री जगदीश भाटिया एक कर्मठ और निष्ठावान कार्यकर्ता थे और वे आर्य समाज का काम करने के लिये समर्पित रहते थे। उन्हें योग शिविर लगाने में बहुत रुचि थी और उन्होंने नगर में अनेक स्थानों पर योग शिविर लगाये। उनके निधन से परिवार और समाज को भारी क्षति पहुँची है। प्रार्थना सभा में भारी गिनती में आर्य जनों ने उनको नमन किया और श्रद्धांजलि अर्पित की। परम पिता परमात्मा दिवगंत आत्मा को शांति और सदगति प्रदान करे। **-यशपाल वालिया, मन्त्री**

सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्द्धयामो वचोविदः।
सुमृडीको न आ विश।।

-ऋ० १.९१.११

भावार्थ-हे वेदवेद्य परमात्मन्! वेदादि श्रेष्ठ विद्या के ज्ञाता हम लोग, आपकी अनेक पवित्र वेद मन्त्रों से महिमा को गाते हुए, सर्वशक्तिमान्, सृष्टिकर्त्ता, अन्तर्यामी आपके ध्यान में निमग्न होते हैं। दयामय प्रभो! हम आपकी कृपा से अपने हृदय में आपको अनुभव करें, जिससे हम लोग सदा सुखी होवें। क्योंकि आपकी वाणी रूपी वेद में लिखा है 'तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय' अर्थात् उस प्रभु को जान कर ही मनुष्य मृत्यु से पार हो जाता है। मुक्ति के लिए और कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

**त्वं सोम महे भगं त्वं यून ऋतायते।
दक्षं दधासि जीवसे।।**

-ऋ. १.९१.७

भावार्थ-शान्तिप्रद सोम! आप, श्रेष्ठगुणयुक्त और ब्रह्मचर्यादि साधन सम्पन्न जिज्ञासु अपने भक्त को, अनेक प्रकार का ऐश्वर्य और बहुत काल तक जीने के लिए बल प्रदान करते हो। आपकी भक्ति और ब्रह्मचर्य्यादि साधनों के बिना कोई चिरंजीवी नहीं हो सकता, न ही लोक परलोक में सुखी हो सकता है।

**त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः।
न रिष्येत् त्वावतः सखा।।**

-ऋ. १.९१.८

भावार्थ-पुरुषों को इस प्रकार ईश्वर की प्रार्थना करके उत्तम यत्न करना चाहिए कि जिससे धर्म को छोड़ने और अधर्म के ग्रहण करने की इच्छा भी न उठे। धर्म और अधर्म की प्रवृत्ति में मन की इच्छा ही कारण है। मन को सत्संग, स्वाध्याय और प्रभुभक्ति में लगाने से, धर्म के त्याग और अधर्म के ग्रहण में इच्छा ही न होगी।

आर्य समाज चौक पटियाला के श्री राज कुमार सिंगला पांचवीं बार प्रधान

दिनांक 27.5.2018 रविवार को आर्य समाज चौंक पटियाला का वार्षिक चुनाव हुआ जिसमें सर्वसम्मति से पांचवीं बार श्री राज कुमार सिंगला को आर्य समाज का प्रधान चुना गया। इससे पूर्व आर्य समाज की यज्ञशाला में हवन यज्ञ करते हुये परिवार सहित श्री राज कुमार सिंगला।

आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौंक पटियाला में वार्षिक चुनाव सम्बन्धी बैठक दिनांक 27.5.2018 दिन रविवार को हुई जिसकी अध्यक्षता कर्नल आनन्द मोहन सेठी ने की। इस बैठक में श्री राज कुमार सिंगला लगातार पांचवीं बार सर्वसम्मति से आर्य समाज चौक पटियाला के प्रधान पद के लिये चुने गये। सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से प्रधान श्री राज कुमार सिंगला जी को अपनी कार्यकारिणी सभा चुनने का अधिकार भी दिया।

सभी सदस्यों ने इस मौके पर प्रधान श्री राज कुमार सिंगला को फूल मालाएं पहना कर बधाई देते हुये कहा कि आगे भी उनके नेतृत्व में आर्य समाज, आर्य समाज चौंक पटियाला पिछले पांच वर्षों की तरह समाज निर्माण, विकास और प्रचार कार्य जारी रहेंगे और समाज का यश व समृद्धि में निरन्तर बढ़ौत्तरी होती रहेगी।

प्रधान श्री राज कुमार सिंगला ने सभी सदस्यों का धन्यवाद किया और विश्वास दिलाया कि वह सभी सदस्यों के सहयोग से पहले की तरह कार्य करते रहेंगे। इस अवसर पर वेद प्रकाश तुली, जितेन्द्र शर्मा, कर्नल आनन्द मोहन सेठी, प्रवीण चौधरी, रमेश गंडोत्रा, प्रो. के.के. मोदगिल, गुलाब सिंह, डा. रमण शर्मा, यशपाल जुनेजा, अरुण आर्य, प्रेमलता सिंगला, वैजयन्ती माला सेठी, सरिता आर्या आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

संस्कृत में 100 में से 99 अंक

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना का पंजाब स्कूल बोर्ड की वार्षिक परीक्षा में दसवीं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। स्कूल के मेधावी छात्रों ने 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करके संस्था के नाम को रोशन किया। इस स्कूल में आर्य समाज की विचारधारा को बढ़ाने के उद्देश्य से तथा संस्कृत को बढ़ावा देने के उद्देश्य से छठीं से दसवीं कक्षा तक संस्कृत का विषय अनिवार्य है। इस वर्ष स्कूल की छात्रा कविता से संस्कृत विषय में 100 में से 99 अंक लेकर आर्य समाज का मान बढ़ाया। इस उपलब्धि के लिए स्कूल का स्टॉफ, प्रबन्धकीय कमेटी के सभी अधिकारी एवं सदस्यगण बधाई के पात्र हैं।

प्रिंसिपल दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना

दयानन्द पब्लिक स्कूल, दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में ग्रीष्मावकाश के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। इस हवन यज्ञ में स्कूल की प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री संत कुमार जी ने भी हिस्सा लिया।

ग्रीष्मावकाश पर हवन यज्ञ का आयोजन

दयानन्द पब्लिक स्कूल, दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में ग्रीष्मावकाश के उपलक्ष्य में सभी छात्रों के अच्छे स्वास्थ्य हेतु हवन यज्ञ का आयोजन स्कूल के प्रांगण में किया गया। इसमें स्कूल के सभी छात्रों एवं शिक्षक वर्ग के अतिरिक्त स्कूल की प्रबन्ध समिति के पदाधिकारी भी शामिल हुये। इस अवसर पर प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री संत कुमार जी ने अपने सम्बोधन में बच्चों को स्वास्थ्य रक्षा के कई सुझाव दिये ताकि बच्चे रसायनयुक्त पदार्थों का सेवन करने से बचे। उन्होंने बच्चों को योग करने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि योग तभी मनुष्य के शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक रोगों और निर्बलताओं को दूर करके दुख को दूर करता है जबकि मनुष्य का आहार, व्यवहार, सोना, जागना तथा अन्य शरीर की चेष्टाएं और कर्म युक्त अर्थात प्रकृति के अनुकूल हों। उन्होंने बच्चों को छुट्टियों में स्वाध्याय करने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यहां आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखेंगे वहीं आप अपनी पढ़ाई का भी पूरा पूरा ध्यान रखना है ताकि अवकाश के बाद आप को किसी तरह की समस्या का सामना न करना पड़े। स्कूल की प्रिंसीपल मैडम ने हवन यज्ञ के पश्चात शास्त्री जी का धन्यवाद किया और बच्चों के उत्तम स्वास्थ्य के मंगल कामना की। स्कूल में वैदिक धर्म के अनुसार समय समय पर हवन यज्ञ का आयोजन करवाया जाता है। यह संस्था आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार के लिये हर समय प्रयास करती रहती है।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।